मंदी के पीछे का डर क्या है?

लेखक - उदित मिश्रा (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

19 अगस्त, 2019

"व्यापार और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं ने सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया है। क्या हमें फिर से वैश्विक मंदी का सामना करना पड़ेगा? अगर वैश्विक मंदी आती है, तो भारत पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा और इससे निपटने के लिए उसे क्या उपाय अपनाने चाहिए? इस आलेख में हम इन्हीं सब प्रश्नों का उत्तर जानेंगे।"

आर्थिक विकास पर एक और गिरावट के बाद एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में वैश्विक अर्थव्यवस्था बुरी खबर से प्रभावित है। बुधवार को, दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी के आंकड़ों से पता चला है कि अप्रैल-जून तिमाही (Q2) में इसकी जीडीपी 0.1% तक सिकुड़ गई। अमेरिका और चीन के बीच व्यापार तनाव और ब्रेक्सिट के कारण अनिश्चितता ने जर्मन निर्यात को बुरी तरह प्रभावित किया है। अमेरिका और चीन के बाद जर्मनी दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारी है।

दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं पहले से ही कुछ परेशानी में हैं। 2019 की दूसरी तिमाही में अमेरिका पहली तिमाही के 3.2% के मुकाबले सिर्फ 2.1% बढ़ा है। चीन की वृद्धि लंबे समय से खराब चल रही है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, चीनी शहरों में बेरोजगारी की दर अब उच्चतम रिकॉर्ड स्तर पर है और अन्य प्रमुख क्षेत्रों जैसे कि कारखाना उत्पादन (जो 2008 के वित्तीय संकट के बाद से सबसे कम है) खराब स्थिति में हैं। भले ही जापानी अर्थव्यवस्था ने Q2 में 1.8% की वार्षिक दर से बढ़कर सभी को चौंका दिया होगा, लेकिन इसे भी मंदी को दूर करने के लिए लड़ना पड़ रहा है।

निवेशक की भावना इतनी खराब हो गयी है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा सितंबर से दिसंबर तक चीनी आयात पर टैरिफ का एक नया सेट टालने का निर्णय भी अमेरिकी बॉन्ड (ट्रेजरी) यील्ड (बॉन्ड यील्ड, बॉन्ड निवेश से होने वाले लाभ का एक पैमाना है) को बेहतर नहीं कर पाया। अमेरिकी बाजारों के खुलने के साथ ही 30 साल की बॉन्ड यील्ड अपने ऐतिहासिक स्तर पर गिर गई, जबकि 10 साल की बॉन्ड यील्ड दो साल के बॉन्ड यील्ड के नीचे गिर गई।

यह निकट भविष्य में मंदी की संभावना को इंगित करता है। सीधे शब्दों में कहें, तो वर्तमान में निवेशक सुरक्षित विकल्पों की तलाश कर रहे हैं और चूंकि अमेरिकी बॉण्ड सबसे सुरक्षित दांव में से एक हैं, इसलिए वे अधिक खरीदे जा रहे हैं। इससे उनकी कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई है और उनकी यील्ड में गिरावट आई है।

तो, क्या वैश्विक मंदी की संभावना है?

इस महीने की शुरुआत में, एक अग्रणी निवेश बैंक, मॉर्गन स्टेनली के शोधकर्त्ताओं ने चेतावनी दी है कि अगर अमेरिका और चीन अगले चार से छह महीनों में टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को बंद नहीं करते हैं, तो वैश्विक आर्थिक विकास दर सात साल के निचले स्तर यानि 2.8% पर पहुँच जाएगी और इससे भी बदतर स्थिति यह है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अगले तीन तिमाहियों (यानी, नौ महीने) के भीतर मंदी में प्रवेश कर सकती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में आखिरी भारी गिरावट 2008 में आए वित्तीय संकट के बाद देखी गयी थी, जो 2010 तक जारी रही।

वैश्विक मंदी क्या है?

एक अर्थव्यवस्था में, मंदी तब होती है जब आउटपुट में गिरावट लगातार दो तिमाहियों (यानी, छह महीने) तक रहे। हालांकि,

वैश्विक मंदी के लिए, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएं आर्थिक विकास दर में गिरावट से परे देखती हैं; वे इसके बजाये रोजगार या तेल की मांग आदि के संदर्भ में व्यापक प्रभाव को देखती हैं। दीर्घकालिक वैश्विक विकास औसत 3.5% है। मंदी की सीमा 2.5% है।

क्या सच में मंदी आएगी?

इस महीने की शुरुआत में, अमेरिका ने चीन को 'मुद्रा मैनिपुलेटर' घोषित किया था। दूसरे शब्दों में कहें, तो वाशिंगटन ने बीजिंग पर आरोप लगाया कि वह जानबूझकर युआन को कमजोर कर रहा है, ताकि अमेरिकी निर्यात को और अधिक आकर्षक बनाया

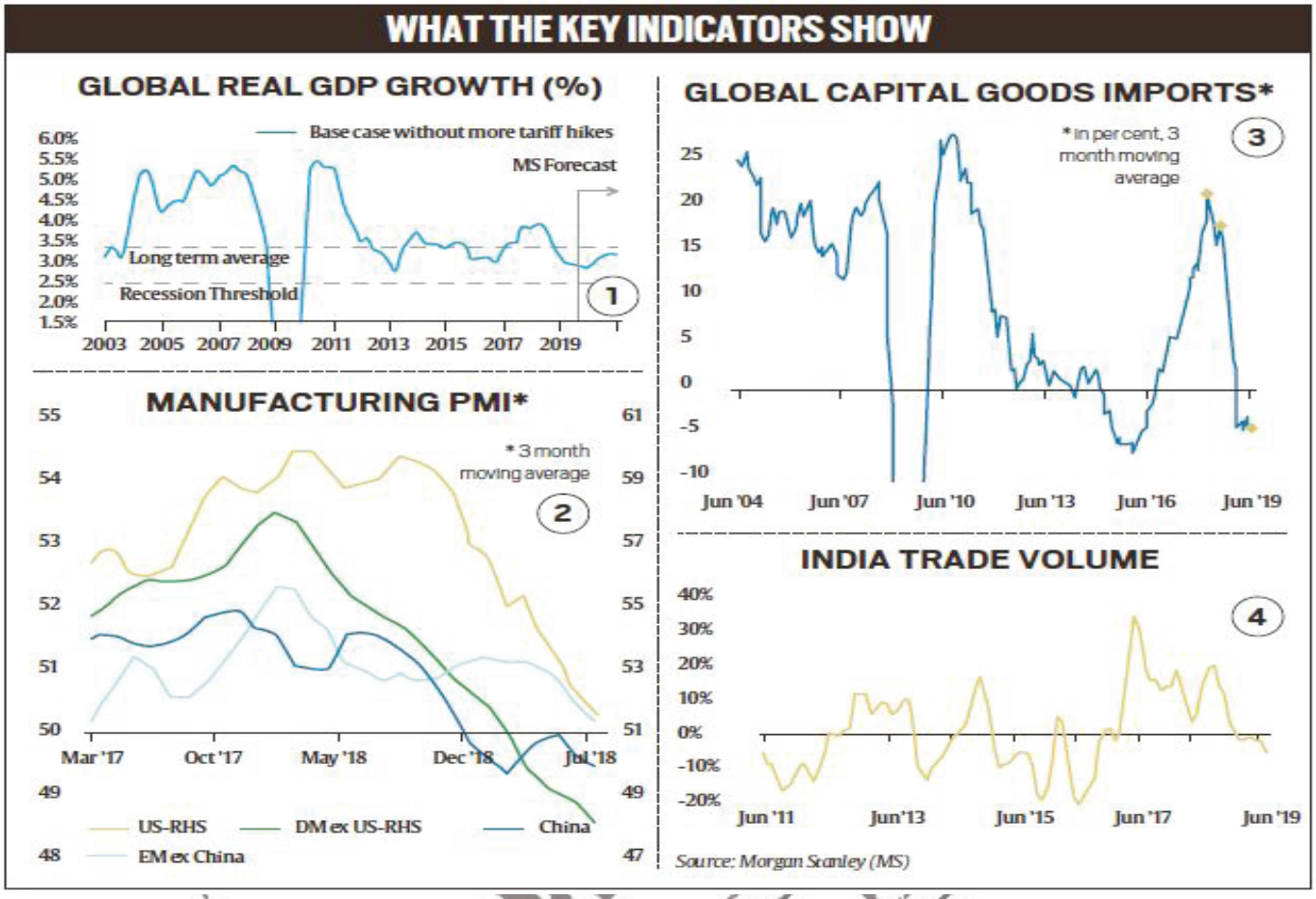

जा सके तथा अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव को कम किया जा सके।

दोनों के बीच गहन व्यापार युद्ध में पहले से ही कमजोर वैश्विक विकास को पटरी से उतारने की क्षमता है और वर्तमान की स्थिति एक स्पष्ट संकेत भी दे रही है। उदाहरण के लिए, ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स और नए ऑर्डर सब-इंडेक्स ने जुलाई में लगातार दूसरे महीने के लिए अनुबंध किया है; वे पहले से ही सात साल के निचले स्तर पर हैं। इसके अलावा, वैश्विक पूँजी व्यय चक्र में ठहराव व्याप्त है; 2018 की शुरुआत के बाद से, नाममात्र की पूंजीगत वस्तुओं के आयात में तेजी से गिरावट आई है। (यानी, घटती मांग की प्रत्याशा में पूंजी निवेश में गिरावट है।)

यह वैश्विक मंदी का कारण कैसे बन सकता है?

इसके लिए जर्मन मंदी एक बहुत अच्छा उदाहरण है। वैश्विक व्यापार की पूर्ण मात्रा में स्थिरता आई है और प्रतिशत परिवर्तन के संदर्भ में, व्यापार अनुबंधित है। इससे भी बदतर व्यापार की संरचना है जो हिट हो रही है और आगे भी हिट होने की संभावना है। उच्चतर टैरिफ न केवल डिमांड को कमजोर करता है, बल्कि यह महत्वपूर्ण रूप से, बिजनेस कॉन्फिडेंस को भी प्रभावित करता है।

आशंका यह है कि वैश्विक व्यापार अनिश्चितता एक नकारात्मक चक्र शुरू कर सकती है, जिसमें उपभोक्ता द्वारा वस्तुओं की कम मांग को देखते हुए व्यवसायी अधिक निवेश करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास की कमी महसूस करेंगे। कम पूंजी निवेश

कम रोजगार का सृजन करेगा, जो बदले में, कम मजदूरी और अंततः, दुनिया में मांग को पूरी तरह से प्रभावित करेगा।

इस परिदृश्य को जो मुश्किल बनाता है वह यह है कि मौद्रिक नीति पहले से ही ढीली है, अर्थात् पैसा उधार लेना सस्ता हो गया है और इस वक्त एक मंदी आने से उबरना मुश्किल हो जायेगा।

भारत क्या कर सकता है?

जैसा कि चार्ट-4 दिखाता है, भारत का व्यापार पहले से ही पीड़ित है और यहाँ रोजगार की समस्या है। इस तरह की अर्थव्यवस्था, जो अपने देश में विकास को खोजने के लिए संघर्ष कर रही है, उसके लिए निर्यात एक राहत प्रदान करने वाली युक्ति हो सकती है।

निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भारत क्या कर सकता है?

एचएसबीसी के वैश्विक शोध के 2016 के विश्लेषण से पता चला है कि वैश्विक मांग में कमी और ओवरवैल्यूड रुपए के मुकाबले निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धा में कमी के लिए घरेलू अड़चनें अधिक जिम्मेदार थीं। दूसरे शब्दों में कहें, तो बेहतर सड़कों, अधिक बिजली, व्यापार करने के आसान नियम आदि जैसी बाधाओं को संबोधित करते हुए निर्यात को बढ़ावा देना दीर्घकालिक लाभ प्रदान कर सकता है।

GS World टीम...

आर्थिक मंदी

चर्चा में क्यों?

- भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी तेजी धीरे-धीरे खो रही है। अर्थव्यवस्था का हर क्षेत्र मांग की कमी से प्रभावित है।
- आरबीआई ने भी अपनी मौद्रिक समिति की बैठक में भारतीय अर्थव्यवस्था के जीडीपी ग्रोथ रेट के पूर्वानुमान को घटाकर 6.9% कर, दिया है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के आंकड़ों पर गौर करें तो निष्कर्ष निकल रहा है कि वह धीरे-धीरे मंदी की तरफ बढ़ रही है।
- ऑटो सेक्टर मंदी की मार से बुरी तरह से प्रभावित है। लगातार घटती मांग ने डीलर्स की चिंता बढ़ा दी। कार और बाइकों की बिक्री पिछले दो दशक के सबसे निचले स्तर पर है।

क्या है?

- जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में निरन्तर गिरावट हो रही हो और सकल घरेलू उत्पाद कम से कम तीन महीने डाउन ग्रोथ में हो, तो इस स्थिति को विश्व आर्थिक मंदी कहते हैं।

वैश्विक स्थिति

- अमेरिका और चीन के बीच जारी ट्रेड वॉर की वजह से भी दुनिया में आर्थिक मंदी का खतरा बढ़ता नजर आ रहा था। इन दोनों महाशक्तियों के बीच हो रही कारोबारी जंग ने कई छोटे देशों को मुश्किल में डाल दिया है।
- दुनियाभर के वित्तीय बाजारों ने इस सप्ताह अमेरिका में मंदी का दौर शुरू होने के संकेत दे दिए हैं। इससे निवेशकों के साथ ही कंपनियों में भी घबराहट का माहौल दिखाई दे रहा है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने भी कहा कि अगर 2020 में चुनाव हारा, तो देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी।
- अर्जेंटीना की मुद्रा पेसो का अमेरिकी डॉलर की तुलना में इस हफ्ते 20 फीसदी तक अवमूल्यन हो गया है। देश में मची आर्थिक उथल-पुथल के बाद वित्तमंत्री निकोलस दुजोने ने शनिवार को इस्तीफा दे दिया।
- अमेरिका की इन्वेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी मॉर्गन स्टेनली ने कहा कि अगले 9 महीनों में आर्थिक मंदी आ जाएगी। हालांकि, भारत इस मंदी की चपेट से थोड़ा दूर रहेगा।
- चीन पर अमेरिकी शिकंजा लगातार कसता जा रहा है। इस वजह से यहाँ की विकास दर लगातार कम हो रही है। IMF ने चीन की विकास दर को घटाकर 6.2 फीसदी कर दिया है।

अमेरिका में मंदी के संकेत

- अमेरिका में रोजगार दर में कमी।
- लोगों की क्रय शक्ति या खपत दर में गिरावट।
- यू.एस. हमेशा से ही विश्व अर्थव्यवस्था के लिये विकास का प्रमुख चालक रहा है। अमेरिका की अर्थव्यवस्था में ठहराव आ गया है, जिसके कारण विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन और सेवाओं को बढ़ने से वैश्विक अर्थव्यवस्था को हो रहे नुकसान की भरपाई करने में वह सक्षम नहीं होगा।

- इसका उन अन्य अर्थव्यवस्थाओं पर अनपेक्षित लाभ प्रभाव पड़ेगा, जो तीसरे देश के निर्यात के लिये अमेरिका को माल और सेवाओं की आपूर्ति करते हैं।
- कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, दुनिया की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ भी मंदी के कारण प्रभावित हो रही हैं।

अमेरिका-चीन ट्रेड वॉर का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- चीनी आयात में मंदी के परिणामस्वरूप कुछ देशों (विशेष रूप से दक्षिण एशियाई देशों) को नुकसान हो रहा है, जो विभिन्न घटकों सहित अन्य तैयार माल तथा 'सप्लाई वैल्यू चेन' के लिये चीन पर निर्भर हैं।
- विशेष रूप से अफ्रीका और दक्षिण अमेरिकी क्षेत्र के उन देशों के लिये यह एक झटका होगा, जो चीन को कच्चे माल का निर्यात करते हैं।
- ऐसा अनुमान लगाया गया है कि इस ट्रेड वॉर में पहले से ही जीडीपी का कम-से-कम 0.1% का नुकसान हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका में उपभोक्ता चीनी वस्तुओं पर बढ़े हुए टैरिफ का खामियाजा भुगत रहे हैं, जिससे देश में मुद्रास्फीति की स्थिति बढ़ रही है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. वैश्विक मंदी के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. एक अर्थव्यवस्था में मंदी तब होती है, जब आउटपुट में गिरावट लगातार दो तिमाहियों यानी छह माह तक रहे।
2. वैश्विक मंदी के लिए, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएं आर्थिक विकास दर में गिरावट के बजाय रोजगार या तेल की मांग आदि के व्यापक प्रभाव को देखती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements regarding the global recession.

1. A slowdown in an economy occurs when the decline in output remains for two consecutive quarters ie six months.
2. For the global recession, institutions like International Monetary Fund see the broad impact of employment or oil demand etc. rather than a decline in economic growth rate

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2

(c) both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: वैश्विक मंदी से आप क्या समझते हैं? वर्तमान वैश्विक घटनाक्रम वैश्विक मंदी का कारण कैसे बन सकता है? चर्चा कीजिए। **(250 शब्द)**

Q. What do you understand by global recession? Discuss how current global events can cause global recession. **(250 Words)**

नोट : 17 अगस्त को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।